दमयन्ती

प्रणेता

धर्मरत्न पं० काशीनाथ पाण्डेय 'चन्द्रमौलि'
संस्कृतव्याकरणाचार्य, काव्यरत्न, तर्करत्न, विद्याभूषण
सीनियर संस्कृत टीचर
सादुल हाई स्कूल बीकानेर
प्रधानमन्त्री
तुलसी साहित्यानुसंधान परिषद्
बीकानेर

प्रकाशक
ईश्वरानन्द शर्मा शास्त्री सारस्वत प्रभाकर
सरस्वती सदन, बीकानेर

प्रकाशक:—
ईश्वरानन्द शर्मा शास्त्री सारस्वत प्रभाकर
प्रकाशन मंत्री
सरस्वती सदन, बीकानेर

मूल्य २)
१६५४ ई०

मुद्रक
शेखरचन्द्र सकसेना, साहित्यरत्न
एजुकेशनल प्रेस, बीकानेर

वैजयन्ती के यशस्वी कवि

स्वतंत्रता-संग्राम

के

अमर शहीदों

को

जीवन-पथ प्रशस्त हो जग का, दूर देश से भीति भ्रान्ति हो।

मेरी काव्यसाधना के मिस, द्रुत समाज में त्रिविध क्रान्ति हो।

प्रकाशकीय

सरस्वती-सदन बीकानेर के प्रथम प्रकाशन "पुष्पाञ्जलि" पर साहित्यिक विद्वानों ने भूरि भूरि प्रशंसात्मक सम्मतियाँ प्रेषित कर सदन का उत्साह प्रवर्धन किया है। उसी का अभिनव फल है कि हम द्वितीय उपहार "वैजयन्ती" का भव्य प्रकाशन बड़े उत्साह के साथ कर रहे हैं। यदि भविष्य में भी इसी प्रकार का सहयोग मिलता रहा तो अविलम्ब तृतीय प्रकाशन 'दहेज" भी पाठकों के कर कमलों में उपहृत कर सकेंगे।

हमारा यहूद्देश्य प्रगतिपथ प्रशस्त होता जा रहा है, कि जहाँ सदन के उपाध्यक्ष श्री विट्ठलदास कोठारी की शालीन वदान्यता से हिन्दूपीडित सेवा समिति से प्रकाशन द्रव्य साहाय्य प्राप्त होता रहा है, वहाँ श्री कोठारी 'पुष्पाञ्जलि' 'दहेज' के लेखक के स्वरूप में भी सदन के लिए वरदान सिद्ध हो रहे हैं।

सर्वतन्त्र स्वतन्त्र आचार्य चरण कविवर श्री आचार्य चन्द्रमौलि जी की "वैजयन्ती" से यदि क्रान्ति गर्भित प्रगति क्षेत्र में अभिनव अंकुर का दिव्य प्रस्फुटन हुआ तो सदन अपना आयास सफल समझेगा। आचार्य श्री की सदन पर वरद कृपा के लिए हम सावनत आभार प्रदर्शन करते हैं। आशा है "वैजयन्ती" हिन्दी साहित्य की वैजयन्ती अवश्य बनेगी।

ईश्वरानन्द शास्त्री सारस्वत
प्रकाशन मन्त्री

प्राक्कथन

कविता का प्रादुर्भाव कहाँ कैसे क्यों हुआ। इस विषय में निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता। वैदिक साहित्य में "उषा" इत्यादि के वर्णनों में विस्मयादि भावों की अभिव्यक्ति परिलक्षित होती है। आदि कवि का "मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः" यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्" पद्य लौकिक कविता का आधारस्वरूप समझा जाता है। वाल्मीकि का करुणाकलित हृदय ही पूर्वोक्त पद्यरूप में निगलित हो उठा है। भवभूति ने भी "एको रसः करुण एव"। "अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्" से करुण रस की महनीयता सिद्ध कर "उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते को चरितार्थ किया है। करुण की अभिव्यक्ति से कवि को आत्मप्रसार का अवसर प्राप्त होता है। "आत्मवत् सर्वभूतेषु" को इससे रचनात्मक स्वरूप संसिद्ध होता है। भावुक कवि को संसार के यावत् पदार्थ करुणामय प्रतीत होते हैं। प्रकृति का रुदन गान उसे पद पद पर सुनाई पड़ता है; किन्तु रतिमय मादक परिस्थितियों में करुण का परिपाक न होकर रसराज शृंगार की परिपुष्टि होती है, जो जीवन का एक मनोहर पहलू है। स्थितिविशेष में उत्साह परिलक्षित होने पर वीररस का आविर्भाव भी कम आनन्दप्रद नहीं होता। इस प्रकार रस के अखंड होने पर भी सुविधानुसार उसके समीहित भेद भी किये जाते हैं।

काव्य को परखने की कसौटी रस माना जाता है। यही काव्य की आत्मा है। रस उस आनन्द को कहते हैं जो किसी भाव के उदय होने से लेकर परिपक्वावस्था तक उपयुक्त सांगोपांग परिस्थितियों के बीच निर्वाह की अनुभूति-पथ में से हो जाने से होता है, कविता में भाव की प्रधानता होने से विशिष्टभावों से युक्त साधारण मानव हृदयानुभूति विषयक भाव ही कविता को आकर्षक बनाने में समर्थ होता है। कवि के हृदय में जागरित भाव जब होता, पाठक के हृदय को स्पर्श करता है तभी उसकी महत्ता मानी जाती है। किसी भाव की संप्रेषण की यह योग्यता उपयुक्त परिस्थितियों में सांगोपांग निर्वाह ही से मिल सकती है। इसलिए काव्य में स्वाभाविक पूर्णचित्र की भी प्रधानता मानी जाती है। ऐसी स्थिति में कवि को स्वयं विषयों के बाहरी आवरण को भेद कर उसके अन्तरतम में प्रवेश करना होता है। इस क्रान्तिदर्शिता के तत्व को ध्यान में रखने पर ही रसपद्धति सजीव की जा सकती है।

क्रान्तिदर्शिता के लिए सूक्ष्मनिरीक्षण अपेक्षित होता है। हृदय के संवेदनशील होने पर उन्मीलित चक्षुओं से सामान्य व्यवहार में भी पद पद पर उसका साक्षात्कार होता ही रहता है। मानव का संवेदनशील हृदय अनभ्यास से अनुर्वर हो जाता है। इसीलिए आचार्य मम्मट ने भी शास्त्रज्ञशिक्षयाभ्यासः को स्वीकार किया है।

हिन्दी साहित्य के विभिन्न युगों में काव्यधारा अनेक रूपों में अजस्र प्रवाहित होती रही है प्रगतिवाद उसकी नवीनतम प्रवृत्ति है। यह धारा साम्य की भावना से ओतप्रोत है। साहित्य तथा समाज में घनिष्ठ सम्बन्ध होने से जीवित साहित्य में समाज का प्रतिबिम्ब पड़ना

अभिनन्दन

नव्य व्याकरणाचार्य श्री काशीनाथ पाण्डेय "आचार्य चन्द्रमौलिजी" की वैजयन्ती नामक काव्यपुस्तिका की मधुर सरस तथा भावमयी कविताओं का रसास्वादन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। संस्कृत के प्रौढ़ पंडित होने के कारण इनकी रचनाओं में भावगाम्भीर्य और पद लालित्य दोनों का उचित सन्निवेश हो सका है। गीतों में कवि की अपनी अनुभूति और अपनी भावनाओं का अभिव्यंजन जितना व्यापक और पूर्ण होता है उतना ही उसका काव्य सर्व हृदय ग्राही होता है। "आचार्य चन्द्रमौलि" के गीतों में भावमय हृदय संस्पर्श की जितनी क्षमता है उतनी साधारण हिन्दी कवियों की रचनाओं में प्राप्त नहीं होती।

"विप्लव" में जिस कल्याणकारिणी क्रान्ति की कल्पना की गई है वह आगे रचनात्मिका प्रकृति का निर्देश करती हुई, "करो मरो" और "चला चक्र है" में अपनी सावयव मुद्रा में विस्फुरित हो गई है। और फिर "बेशक तूफान मचा देंगे" में कुछ स्वर खोलकर मुखरित हो उठी है। आगे चलकर "पूजागीत" तथा "आनन्द सिन्धु" में कवि की अन्तः प्रतिभा और आनन्दवृत्ति कुछ दार्शनिक भावुकता के साथ मुखरित हुई है। इस प्रकार गीत के दोनों पक्ष अन्तःप्रेरणात्मक और बाह्य प्रभावात्मक दोनों का चमत्कार इनकी रचनाओं में एक साथ प्राप्त हो जाता है।

हिन्दी साहित्य के विशाल और प्रशस्त क्षेत्र में मैं वैजयन्ती का अभिनन्दन करता हूँ और आशा करता हूँ कि यह हिन्दी साहित्य की वैजयन्ती बन जायगी।

६३/४३ उत्तर बेनिया बाग
काशी
१४-६-५४

साहित्याचार्य
पं. सीताराम चतुर्वेदी एम. ए.
(हिन्दी, संस्कृत, पाली, प्राचीन भारतीय इतिहास तथा संस्कृति) बी. टी. एल. एल. बी.

कवि कर्म कुशल आचार्य श्री चन्द्रमौलि कृत मुक्तक गीतिकाव्य "वैजयन्ती" के मधुर मुदिर मदिर मकरन्दनिर्भर सुमन-सौरभ का समामनतः समास्वादन किया। विविध वर्णा वैजयन्ती की प्रत्येक कुसुम कोश स्वतन्त्र भारतीय नागरों के रसास्वाद के लिए रसपूर्ण चषक है। इसके सभी सुमन देशप्रेम, देश दयनीय दशा स्वात्मानुभूति मन्जुल रंगरंजित, आधुनिक रहस्यवादीयदर्शन मंडनमंडित और भक्ति मधुर रसाप्लावित हैं। अतः वैजयन्तीपति से प्रार्थना है कि वैजयन्ती भावुकजनहृदयराजेश्वरी वैजयन्ती होकर हिन्दीराष्ट्र की वैजयन्ती होवे। शिवम्

पंचमंदिर
बीकानेर
रथयात्रा २०११

परमहंसपरिव्राजकाचार्य
(सोमेश्वरानन्द भारती)
दर्शनालंकार विद्यारत्न
अध्यक्ष, पंचमंदिर

अनुक्रमणिका

हिन्दी साहित्य के विशाल और प्रशस्त क्षेत्र में मैं वैजयन्ती का अभिनन्दन करता हूँ और आशा करता हूँ कि यह हिन्दी साहित्य की वैजयन्ती बन जायगी।

६३/४३ उत्तर बेनिया बाग
काशी
१४-६-५४

साहित्याचार्य
पं. सीताराम चतुर्वेदी एम. ए.
(हिन्दी, संस्कृत, पाली, प्रन्नभारतीय इतिहास तथा संस्कृति) बी. टी. एल. एल. बी.

कवि कर्म कुशल आचार्य श्री चन्द्रमौलि कृत मुक्तक गीतिकाव्य "वैजयन्ती" के मधुर सुंदिर मदिर मकरन्दनिर्भर सुमन-सौरभ का समामत. समास्वादन किया। विविध वर्णा वैजयन्ती की प्रत्येक कुसुम कोश स्वतन्त्र भारतीय नागरो के रसास्वाद के लिए रसपूर्ण चषक है। इसके सभी सुमन देशप्रेम, देश दयनीय दशा स्वात्मानुभूति सम्पुल रंगरंजित, आधुनिक रहस्यवादीयदर्शन मंडनमंडित और भक्ति मधुर रसाप्लावित हैं। अतः वैजयन्तीपति से प्रार्थना है कि वैजयन्ती भावुकजनहृदयराजेश्वरी वैजयन्ती होकर हिन्दीराष्ट्र की वैजयन्ती होवे। शिवम्

पंचमंदिर
बीकानेर
रथयात्रा २०११

परमहंसपरिव्राजकाचार्य
(सोमेश्वरानन्द भारती)
दर्शनालंकार विद्यारत्न
अध्यक्ष, पंचमंदिर

अनुक्रमणिका

स्वतन्त्रता

मिट गई कालिमा है नभ से,
मस्तक पर कुंकुम-राग विमल।
आई स्वतन्त्रता ले ऊषा,
खिल गया देश का हृदय कमल।

मनहर किरणें नभ में नर्तित,
आभावलि से दीपित दिगन्त।
सब हरे भरे लहलहा उठे,
कोई नूतन आया वसन्त।

परिवर्तित गति बहता समीर,
विहगावलि के स्वर में विलास।
वेदना-सदन, अस्तित्व-हीन,
कण कण में छाया मधुर हास।

पादप, लतिकाएं, गुल्म निचय,
प्रेमालिगन में लीन सुघर।
मधुपावलि जिनपर झूम झूम,
गुन गुन गाती है मधुर मधुर।

उत्कीर्ण दिशाओं में करता,
सुमनों का ले मधुमय पराग ।
शीतल सुगन्ध मलयज समीर,
सौरभ से मानस सानुराग ।

स्पन्दित अणु अणु अग जग का
सर्वत्र मनोरम है विकास ।
गन्तव्य विषय में पथिक लोक
आश्वासनमय उच्छ्वास लास

लहलहा उठा जनता का मन
मरकतमणि सा मनहर शाद्वल ।
मिट गया ताप, संसिक्त देश,
रिमझिम रिमझिम बरसे बादल ।

है पराधीनता दूर हुई,
जनमन मयूर नाचे विभोर ।
उमड़ी प्रसन्नता बन सागर,
मिल सका कहीं क्या ओर छोर ?

अपमान मिटा, सम्मान मिला,
मिल गया आज खोया प्रभात ।
हम दौड़ पड़े जिसके निमित्त,
खिल उठा देश का पारिजात ।

मिट गया प्रत्न सब जीर्ण शीर्ण,
आये कोमल किसलय नवीन।
वसुपूर्ण देश का कोशजात,
बज उठी आप से आप वीन।

सब एकतार को बजा रहे,
हम हैं स्वतन्त्र जग भी स्वतन्त्र।
दुनिया में कोई नहीं रहे,
परतन्त्र, आज का यही मन्त्र।

द्युतिपूर्ण मनोरम धरा-धाम,
गृह कलश गगनचुम्वी सारे।
जिनमे आकर वे स्वयं खचित,
नभ के निर्मल चंचल तारे।

स्वाधीन देश की विजय-गर्व
से उन्नत जग में लहराती।
जल, थल, नभ के वक्षस्थल पर,
यह राष्ट्र-पताका फहराती।

त्रिगुणात्मक सर्जन का प्रतीक,
शुचि त्रिविध रंग रंजित सुखकर।
यह विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झंडा लहराता मनहर ।

मिट गया भूत, आता भविष्य,
कल का निर्माता बने आज।
विद्युतगति से उन्नति अब हो,
होवे सुधार बदले समाज।

परिवर्तन भी ऐसा होवे
बच सके न जिससे जड़-जंगम।
इक साथ आज भारत में हो
द्रुत त्रिविध क्रान्तियों का संगम।

कुछ वर्ग विशेषों को अर्जन-
का लाभ नहीं सम्भव होगा।
अत्याचार मिटेगा शिव के-
ताण्डव का उद्भव होगा।

जल रही विषमता चिता-ज्वाल,
भर रहा देश का अन्तराल।
मिट रहा व्यक्तिगत स्वार्थ भाव।
है टूट रहा साम्राज्य जाल।

होवे जग में समता प्रचार,
होवें सबके उन्नत विचार।
आप्लावित सारा जग होवे,
बहती गंगा की विमल धार।

★

विप्लव

जीर्ण शीर्ण पत्ते झड़झड़ कर,
अभिनव किसलय वन वन आवें,
जमे रूढ़ि के दृढ़ तुषार आतप,
आतप पाकर गल जावें ।
नवयुग के विज्ञान प्रभा से
तज देंगे निर्मोक मोह को,
पतन न हो, ऊँचे चढ़ना है,
ग्रहण करें उन्नत प्ररोह को ।

उथलपुथल से जीवन गौरव-
का महत्व व्यापक बढ़ जावे;
गिरी, गिरी जो जाति धरा पर,
ऊँचे भृगुतट पर चढ़ जावे ।
सारा का सारा समाज बदले,
कलंक शिर से कढ़ जावे,
आजादी का रक्तराग से,
टीका मस्तक पर मढ़ जावे ।

जड़ चेतन, चेतन जड़ होवें।
हँसने वाले पल पल रोवें।
निर्धन धनी, निबल बलशाली,
शासक सत्ता को द्रुत खोवें।
जालिम बन कर दीन दलित,
अभिमानी आँसू से मुख धोवें।
हिंसक अत्याचारी दलबल—
संग, महानिद्रा में सोवें।

नवयुग का धारा प्रवाह,
सारे जग को आप्लावित करदे।
दुर्ग पुरातन भग्न पड़ा है,
शिलान्यास नूतन का करदे।
मेलसूत्र में बद्ध, मुक्त—
दासता, हर्ष के शीकर भर दे।
सुख का प्याला रिक्त पड़ा—
सदियों से आज लबालब भरदे।

गुणत्रयी की साम्यावस्था—
में शिवताण्डव रे लहराये।
एक गगन पाताल हो चले,
प्रलय पयोद घहर घहराये।

मरुत चले उन्चास धरा—
कंपित, पर्वत चंचल भहराये
खण्ड प्रलय के बाद सृष्टि के
नूतन अंकुर फिर सरसाये ।

|||

बलिवेदी

"है आर्य-धर्म सब से महान
इसका ऊँचा झंडा होवे",
इन क्रान्ति पूर्ण सन्देशों को
पढ़ते पढ़ते चितिछोर चलो।

तुम भव्य विचारों से समाज को
उन्नत कर सुखमय करदो,
अब एक पृष्ठ इतिहास ग्रन्थ में
नूतनता का जोड़ चलो।

जो पड़े सुषुप्ती में, उनको
जागृत करना हो ध्येय प्रबल,
जगके छोटे छोटे सुख से,
हे वीर! आज मुख मोड़ चलो।

अज्ञान तमिस्रा भंग हुई,
नवयुग की नव किरणें जागीं,
पथदर्शक हो सारे समाज के,
रूढ़िवाद को छोड़ चलो।

सौ

यह कौन शक्ति है, रोक सके,
बढ़ चलो वीर! बढ़ चलो वीर!
जो शत्रु सैन्य सामने खड़ी,
निर्मम झटपट झकझोर चलो।

बलिदेवी की है मूर्ति खड़ी
गंभीर विकट मुद्रावाली,
इङ्गित से बलि को बुला रही,
हे आर्य वीर! उस ओर चलो।

सूख गई खेती खेतों की,
है सारी हरियाली सूखी।
सोख रही पानी को पृथ्वी
पता नहीं, कबसे है भूखी।

धूलि उड़ाती आँधी पल पल
अंधा करती वही जा रही।
सॉय सॉय करती निशीथ में
लू की लपटें चली जारहीं।

खलिहानों में निर्जनता है,
दाने दाने के अभाव में।
कैसे हो निर्वाह निर्धनों—
का, महर्घता के कुभाव में।

छोड़ मनुज घरबार भटकते
इधर उधर दाना-पानी को।
जन्मभूमि को भेंट चढ़ाते
आंखों के आविल पानी को।

तन ढँकने को वस्त्र नहीं हैं,
चिथड़े तन पर लटक रहे हैं।
राह नहीं गुमराह बने हैं,
दर दर मारे भटक रहे हैं।

डेरा डाले मैदानों में
आतप में तन तप रहे हैं।
प्रबल वेग से आँधी चलती
खाना अपना पका रहे हैं।

धूलि मिला, कुछ जला और—
आधा कच्चा हैं खाना खाते।
बच्चों का भर रहे पेट आधा,
खुद हैं भूखे सो जाते।

अर्ध चित्र स्वाधीन देश का
निर्धनता से बना हुआ है।
और अर्ध पूंजीपतियों
धनिकों के सुख से सना हुआ है।

चढ़ने को वाहन, खाने को
जिनको है भरपूर मिल रहा।
ऊँचे भवनों में रहते, सुख से
है मानस कमल खिल रहा।

मोटे वेतन, और कमीशन
टी० ए० सरकारी मोटर है।
शत प्रतिशत उपहार मिल रहे
भरा हुआ लक्ष्मी से घर है।

करो मरो

सानु शैल राज का पुकारता, उठो उठो,
वीचियाँ समुद्र की बढ़ा रहीं, बढ़ो बढ़ो,
वारिवाह कह कह रहा है, शत्रुसैन्य पर चढ़ो,
देर हो रही है, युद्धखेत के लिए कढ़ो।

धीर वीर हो, अपार शक्ति साथ जा रही,
राष्ट्रकर्णधार ? जीत सामने बुला रही,
जोश, होश पूर्ण वीर टोलियाँ सुहा रहीं,
जीत गीत मुक्त कंठ से सुरम्य गा रहीं।

स्वर्ग देवियाँ विभोर आरती उतारतीं।
मुक्ति मार्ग में अघोर पुष्पराशि वारतीं,
देव टोलियाँ सुवीर ! वन्दना उचारतीं,
नृत्य, गीत, वाद्यवेश, देवियाँ सँवारतीं।

छा रही हैं, भूरि भीति भ्रान्तियाँ उन्हें हरो,
मातृ-वन्दना निमित्त नित्य भावना भरो;
आर्य देश के सुधीर ! धैर्य चित्त में धरो,
तन रक्त खौलना, शहीद हो, करो, मरो।

★

अमर शहीद

मस्तक पर रोली का टीका,
हाथों में राखी की मोली,
वीरों की रंग ढंग बोली,
चढ़ गई शहीदों की टोली।

पैरों में बेड़ी जकड़ी थी,
हाथों में हथकड़ियां डाली,
फांसी पर सिर पे ताज पहन,
पी गये जहर की वे प्याली।

फांसी के तख्ते पर झूले,
शासन के तख्ते उलट गये,
वे अमर शहीद बने जग के,
सौभाग्य देश के पलट गये।

ललकारा नौकरशाही को,
आजादी के अरमान लिये,
भिड़ गये शान पर अभिमानी,
वे वीर केशरी मान लिए।

वीरों का था हुँकार उठा,
बहती उमंग की धारें थीं,
जेलों के दिल में दहशत थी,
वे काँप उठी दीवारें थीं।

उनके हाथों को हथकड़ियाँ
झटके से झट कड़कड़ा उठीं।
दीवारें भी धड़धड़ा उठीं
बाँहें उनकी फड़फड़ा उठीं।

आँखों से ज्वाला फूट पड़ी
जालिम की हस्ती टूट पड़ी
नौकरशाही की छूट पड़ी,
लूटो वीरो ! है लूट पड़ी।

हँसते हँसते बलिदान हुए,
हँसनेवाले परवाने थे,
मर मर कर जो हैं अमर बने,
आजादी के दीवाने थे।

फाँसी के झूले झूल गये,
बनकर शहीद हो फूल गये,
वे हूल गये हियमें हुलास,
जालिम के दिल में शूल गये।

मस्ती में लहरा मन्ताने,
　　मरना हमको वे सिखा गये,
भारत का मस्तक ऊँचा कर,
　　वीरों का जौहर दिखा गए।

झुके न अत्याचारों से,
　　ऐसे वे धीर मनस्वी थे।
बलिवेदी पर चढ़े वीर;
　　भारत के तरुण तपस्वी थे।

काट काट सिर चढ़ा दिये,
　　चंडी के वीर पुजारी थे,
क्रान्ति जगाई कोने कोने
　　में, वे विप्लवकारी थे।

प्रतिहिंसा की आग धधकती,
　　धध धक उनके सीने में,
चिन्ता रहती उन्हें नहीं थी,
　　मरने में या जीने में।

जागे भाग्य देश के जागे,
　　वीर वेचारे वे जागे,
सीने खोल दिये थे अपने,
　　खुनी गोलियों के आगे।

भाग्य सितारा

हम स्वतन्त्र हैं हरा भरा
नन्दन सा सुन्दर देश हमारा,
आजादी का राग गा रही,
कल कल कल गंगा की धारा।

बहुत दिनों के बाद प्रतीक्षा
करने पर स्वाधीन हुए हैं,
हो जायेंगे उन्नत जग में
आज मिला है प्रबल सहारा।

इसको पाने में वीरों का
चुन-चुनकर बलिदान हुआ है,
देश प्रेम के मतवालों को,
नहीं दिखा पाई है कारा ।

जनगणमन आनन्द चराचर
पुलकित फलित प्रमोद छाया है,
प्रजातन्त्र सरकार हमारी,
है स्वतन्त्र यह देश हमारा ।

सतीश

जिसने सभ्य देश की श्रेणी
में लाकर हमको बिठलाया,
इस दिन को हम भूल सकेंगे,
कभी नहीं, यह जीवन तारा।

सबको पूरी आजादी है
सब स्वतन्त्रता के रक्षक हैं,
सबको सब अधिकार मिला है,
कोई नहीं यहाँ बेचारा।

पथ अवरुद्ध नहीं है उन्नत
प्रगतिशील हो देश हमारा,
जग में भारत का चमकेगा,
सप्तम नभ पर भाग्य-सितारा।

लहर

लहर लहर लहराता मानस
दूर हुआ करुणा-क्रन्दन है।
उठीं उमंगें नई साध ले
आज कल्पना में स्पन्दन है।
हृदयताप भी शान्त हुआ है
लिप्त गरम शीतल चन्दन से।
प्रमुदित सबसे अधिक आज है
भारतवर्ष मातृ-वन्दन से।

आज हिमालय की चोटी से
जग को ही आह्वान किया है।
राष्ट्र-पताका लहराती है
नतमस्तक हो मान दिया है।
सप्त सिन्धु के लहरों पर
हमने जो लय का तान दिया था।
सामगान में लुब्ध, मुग्ध हो
मधुर सोमरस पान किया था।

सीकर वही आज शोभित है
सरिताओं के सरस तटों पर।
रंग अमिट चढ़ गया अचंचल
भारतीय जन हृदय-पटों पर।
घोर निराशा मिटी देश से
अँधियारी क्या अब छाई है?
विद्युत् चकाचौंध को ले जब,
स्वतन्त्रता नभ से आई

होगा राष्ट्रीकरण सभी उद्योगों
का यह विषम सत्य है।
सबल बनेगा देश इसीसे
प्रजातन्त्र का यही कृत्य है।
व्यक्ति नहीं उच्छृङ्खल होगा,
उसे समष्टी में मिलना है।
आँधी उठी, क्रांति लहरात
जड़ से पूँजी को हिलना

सम-वितरण होगा पदार्थ का
लाभ अकेले किसे मिलेगा?
साम्यवाद के ऊपर शासन
होगा, जन मन कमल खिलेगा।

एकीकरण न होगा जब तक
केन्द्र नहीं मजबूत बनेगा
तब तक क्या आजादी से है,
नहीं दीनता शाप टलेगा

उद्योगी भूखे न रहेंगे
उद्योगी बनना ही होगा,
तोड़ न हाथ पैर बैठेंगे,
प्रगती में चलना ही होगा,
पूँजीवाद रहेगा फिर क्या ?
धनी गरीबों का सवाल क्या ?
सभी बराबर मानवता में,
ऊँच-नीच का फिर सवाल क्या ?

...

विजय

दिग्विजय के गान गाओ।

मेरु मस्तक का मुकुट कर
अवनि अम्बर को बँधाकर
सिन्धु की उत्ताल लहरों
से सपनों को जगाओ।
दिग्विजय के गान गाओ।

तीव्र झंझा-वात भय से
भावनाओं के विषय से
चल पड़े, चलते चलो, मग
में न रुककर बैठ जाओ।
दिग्विजय के गान गाओ।

सुन जनगण मन जगाओ,
साज प्रलयंकर सजाओ,
उड़ रही नभ में पताका,
भव्य-नव-निर्माण लाओ।
दिग्विजय के गान गाओ।

विघ्नबाधा से न डरकर,
कंटकों को पद दलित कर,
मातृ-वन्दन के लिए,
बलिदान की वेदी सजाओ ।

दिग्विजय के गान गाओ ।

भारत माता

स्वर्गादपि गरीयसी जननी
जय जय भारत माता

हिमकिरीट मस्तक पर चमके
चम चम उज्वल वेशा
सुजला सुफला शस्य-श्यामला
उर्वर सकल प्रदेशा
मंजुल मूरति राजै,
अटल छत्र शिर छाजै
जन जन मंगल दाता
स्वर्गादपि गरीयसी जननी
जय जय भारत मात

मध्यभाग में विन्ध्य विराजे
सरिता सिंचित-काया
वन उपवन गिरि गुहा निमज्जित
जिसकी अनुपम छाया

मृदु पग सागर धोता
हिमगिरि रत्नमय सोना।
षड् ऋतु शोभित गाता
स्वर्गादपि गरीयसी जननी।
जय जय भारत माता ॥

...

जागे भाग्य देश के जागे

श्रमिक-वर्ग जागा जिस दिन
से दैन्य देश से भागे
जागे भाग्य देश के जागे।

जोश जवानी का संबल है
पैरों में प्रगती का बल है
सभी आज बढ़ते जाते हैं
सुख से आगे आगे ।

जागे भाग्य देश के जागे

धनी गरीबों की जो खाई
उसे पाटना है सुखदाई
और जोड़ना टूट चुके जो
चिर-सनेह के धागे ।

जागे भाग्य देश के जागे

भाषा एक, एक नेता हो
देश नाव को जो खेता हो
झंडा एक, तराना गावें
जन-मन-गण अनुरागे ।

जागे भाग्य देश के जागे ।

आह्वान

अब जाग जाग ऐ हिन्द ! जाग।
आ गया समय ओ हिन्द ! जाग।

अरि ने आकर ललकारा है,
सीमा पर सैन्य पसारा है,
कहता डंके की चोट मार,
लेंगे हम हिन्द हमारा है,
चिनगारी चमक चमक चमकी,
चेती चंडी, लग गई आग।

अब जाग जाग ऐ हिन्द ! जाग।
आ गया समय ओ हिन्द ! जाग।

सुख छोड़ अरे ! तजदे विहार
कस कमर हाथ ले खड्ग धार
प्रस्थान गीति के साथ साथ
भारत माँ की जय जय पुकार

जौहर वीरों का दिखा अरे !
झंडा अपना बस उठा अरे !
कन्या कुमारिका से लेकर
हिमगिरि तक को अब जगा अरे !
पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण
सब ओर उठी ज्वाला कराल।

अब जाग जाग ऐ हिन्द ! जाग।
आ गया समय ओ हिन्द ! जाग।

|||

शुक !

शुक ! क्यों बन्धन में पलता है ?

करते विहग विहार गगन में
उड़ते पंख पसार पवन में
साध न पंखों में स्पन्दन की
जी न फुदकने को करता है ?

शुक ! क्यों बन्धन में पलता है ?

स्वर्ण-मयी पिंजर की आभा
मिला नहीं, नहीं कुछ भाया
सब कुछ है पर आजादी का
सुख न कभी तुमको मिलता है ।

शुक ! क्यों बन्धन में पलता है ?

पद्मिनी दल के आगारें
इन्दीवर की मृदु आभाएँ
सुन्दरियों के सुख सौरभ से
कंज हृदय का जो खिलता है ?

शुक ! क्यों बन्धन में पलता है ?

[illegible]

स्मृति अतीत की कभी न आती
पराधीनता तुझे सुहाती
कहाँ शारिका ! नीट कहाँ !
शावक का प्यार नहीं छलता है !

शुक ! क्यों बन्धन में पलता है ?

गीति

जन्म भूमि-स्नेह मेरे
हृदय में लहरा रहा है।
मिल तन, मन, हो रहा है
रंग कोई छा रहा है।

उत्सर्ग से डरना नहीं
जीवन भले ही काम आये,
उठ रहीं लहरें हृदय
बलिदान गीती गा रहा है।

अब नहीं पीछे हटेंगे।
चल पड़े बढ़ते चलेंगे
सैनिकों का गीत नभ के
बीच, रण में छा रहा है।

मातृ वन्दन के लिए
बलिदान होना जिन्दगी है।
क्रान्ति का सन्देश कोई
दूत नभ से ला रहा है।

अत्याचारी से

मनमानी अब नहीं चलेगी
उत्पीड़न, शोषण न रहेगा ।
अत्याचारों की कुयन्त्रणा
मानव होकर कौन सहेगा ?
मूक वेदना सहते सहते
दिल पर छाले पड़े हुए हैं ।
प्रतिहिंसा की आग धधकती
समर-भूमि में खड़े हुए हैं ।

सहने की सीमा होती है
अत्याचारों का जमघट है ।
बेगुनाह बूढ़े मरते
शिशुओं की हा ! चिल्लाहट है ।
अस्मत लुटी जाती नारियों-
की, रक्त से पूरित [illegible] है ।
धुन धुनकर बलिदान हो रहा
बलिवेदी की आग विकट है ।

[illegible]

नाश, नाश, हा ! महानाश !
विध्वंस एक गूँजता गगन में।
अम्बरतल अवनी पर आता,
आग लगी है आज सदन में।
प्रलयंकारी दृश्य सामने
आँखें जिसको देख न पातीं।
सर्वनाश की काली काली
घटा घहर घिर घिर है आती।

दिन पूरे हो गये पाप के
घड़ा भरा है चेत, चेतने ?
दिन बदलेंगे, अधिक न हो।
गमगीन, सताई अरी वेदने !
अत्याचार दबेगा दुख से
निर्मम अपने ही मारों से
होश ठिकाने आ जायेगा।
पीड़ित आहों के भारों से।

डाल डाल कर फूट परस्पर
उल्लू सीधा कैसे होगा।
रास-रंग में संचित धन भी
पानी जैसा नहीं बहेगा।

दलितों की छाती पर सुख के
महल मनोरम खड़े न होंगे ।
भूख भूख से हो व्याकुल नर,
इधर उधर अब पड़े न होंगे ।

मानवता के भक्षक, सुरसा
के समान लिप्साएँ छोड़ो ।
जीने का हक सबको है, ये
पाप श्रृंखलाएँ अब तोड़ो ।
सोने की चिड़िया को निर्दय
मसल मसल कर चूर्ण किया है ।
जालिम ! तेरा पचा पचा, अपना
सिर्फ खजाना पूर्ण किया है ।

उदर-ज्वाल से जल जल भुन भुन
रोटी का टुकड़ा न मिला हा ।
नग्न घूमते सड़कों पर नर
जीर्ण शीर्ण चिथड़ा न मिला हा ।
दाने दाने को तरसाता
यही आज की मानवता क्या ?
देन यही बीसवीं सदी की
इससे बढ़कर दानवता क्या ?

[illegible]

मानवता के दम भरते अब
कितने दिवस और बीतेंगे ।
कलई खुली जहान जानता
सत्य बोलना कब सीखेंगे ।
पर-प्रतारणा के बल पर क्या
स्वार्थ-साधना पूर्ण बनेगी ?
सँभल सँभल रे ! क्षिप्र चंडिका
खप्पर ले रण में उतरेगी ।

उथल पुथल मच गया विश्व में
क्रान्ति भावना जन में जागी।
पशुता आज मिटेगी लुब्धक !
जलती है जग में बडवागी ।
होगा भस्मसात् इन्धन सा
लपटों में पड़ने पर क्या है।
पारावार है क्षुब्ध हो उठा
चेत चेत जा, बिगड़ा क्या है ।

|||
|

बेशक ! तूफान मचा देंगे

बेशक ! तूफ़ान मचा देंगे ।

हम हद से ठंडे दिल के हैं
दिलवालों की पहचान हमें
जो अभिमानी बनकर आवे
उसका अभिमान मिटा देंगे ।

उसकी हम शान मिटा देंगे ।
बेशक ! तूफ़ान मचा देंगे ।

छेड़ा न अभी तक है हमको
हम शान्त बने सागर सम हैं
जब छेड़ दिया भूले भटके
प्रलयंकर लहर उठा देंगे ।

मिट्टी में शान मिला देंगे ।
बेशक ! तूफ़ान मचा देंगे ।

मतवाला गर जो चढ़ आवे
उसकी हम राख उड़ा देंगे ।

भालों से भाल भिड़ा दें
बेशक ! तूफान मचा दें

सामने अड़ा हो नगपति भी
अपने गौरव पर इठलाता
उसके अभिमानी मस्तक को
डाली सी झुकी झुका देंगे ।

झुकने की सीख सिखा
बेशक ! तूफान मचा दें

अम्बर भी गर हँसता होगा
दीनों के दुख पर दया हीन
लाकर पृथ्वी पर पटक उसे
हँसने का मजा चखा देंगे ।

आसूँ का ज्वार उठा दें
बेशक ! तूफान मचा दें

उत्तुंग तरंगों वाला जो
गर्वीला सागर लहर लहर

लहराना होगा, हुँकारों से
मरु की धूल उड़ा देंगे ।

सिकता की तटी बहा देंगे ।
बेशक ! तूफ़ान मचा देंगे ।

लहराते जोश जवानी में
दिखलाते जौहर यौवन का
तूफ़ान घटा उमड़ा घुमड़ा
सुख की वर्षा बरसा देंगे ।

वन उपवन को हरसा देंगे ।
बेशक ! तूफ़ान मचा देंगे ।

जड़ जमा लिया है रूढ़ियों ने
उनको उखाड़ने को जड़ से,
अग जग कम्पित शंकित होगा
भीषण तूफ़ान मचा देंगे ।

नूतन अंकुर सरसा देंगे ।
बेशक ! तूफ़ान मचा देंगे ।

आर्त-दीनों की आहों से
हिला आज जग का कोना है।
शासन को पीड़ित जनता के
दृढ़तर हाथों में होना है।
राजतन्त्र भग्नावशेष पर
प्रजातन्त्र की नींव पड़ी है।
विश्व विजयिनी शक्ति अपरिमित
रण-सज्जा से सजी खड़ी है।

द्रुत परिवर्तन के प्रवाह का
रोध कौन करने वाला है।
भस्मसात् हो रही विषमता
धधक उठी घस्मर ज्वाला है।
उच्छृंखल शासन का ध्रुव
अन्तिम परिणाम विलय होता है।
व्यभिचारी अत्याचारी जीवन
का अन्त प्रलय होता है।

कौन

मुझको अहो ! बुलाता कौन ?

जगती तल के रंगमंच को
देख देखकर क्षण क्षण पल पल
उन्मन उन्मन मधुर मधुर कल
झंकृत प्रान्तर था मृदु कल कल
अपने इंगित पर वह तन्द्रिल
वीणा तार बजाता कौन ?
मुझको अहो ! बुलाता कौन ?

आजादी के लिए शुल्क
जीवन तक का भी देना होगा।
बदले में बलिदान, देश का
प्रेम-प्रणय ही लेना होगा।
करना है उत्सर्ग सँभल जा
मारू राग सुनाता कौन ?
मुझको अहो ! बुलाता कौन ?

घोर तमिस्रा की मादकता
विवश दासता शिर पर छाई।
आज बरसने जीवन नभ पर
मेघों की अवली घिर आई।
सिक्त हो रहा तन, मन सारा
संतत रस बरसाता कौन ?
मुझको अहो ! बुलाता कौन ?

घोर सुषुप्ती में बेसुध हो
कल्प कल्प तक सोया ही था।
करवट बदल न पाया, लुटता
गया, रत्नचय खोया ही था।
मन्द मन्द स्वर लहरी से है
मादक सुदिर जगाता कौन ?
मुझको अहो ! बुलाता कौन ?

मधुपावलि मधु मुग्ध खेलती
सरसिज सर में फूल रहे हैं
मन्द मन्द शीतल समीर के।
आलिंगन से भूल रहे हैं।
प्राची में नर्तन किरणों का
मनहर मदिर दिखाता कौन ?
मुझको अहो ! बुलाता कौन ?

पड़ा रहा अज्ञान गर्त में
सहता भी अपमान रहा हूँ।
मीठी मीठी आशाओं का
अब तक बना गुलाम रहा हूँ।
इतने दिन गुमराह बना था
सुन्दर राह दिखाता कौन ?
मुझको अहो ! बुलाता कौन ?

जाग गये हैं सुप्रभात
प्रत्यावर्तन भी कभी न होगा।
प्रतिहिंसा की ज्वाल जल रही
मधुर मिलन अब कभी न होगा।
सेनानी का रण-प्रयाण
सन्देश सुनाने आता कौन ?
मुझको अहो ! बुलाता कौन ?

जगे लोक को जगा जगा कर
जीवन का उत्सर्ग करेंगे ।
अम्बरतल के अन्तराल को
बलिदानों से पूर्ण भरेंगे ।
गूँज रही है रणभेरी
नभ वैजयन्ति फहराता कौन ?
मुझको अहो ! बुलाता कौन ?

★

कवि

कवि ! बुजदिल अरे ! बनाता क्यों ?

निकल पड़ा जब घर से बाहर
लेकर अस्त्र शस्त्र सज धज कर
रण-प्रांगण की बलिवेदी पर
बलि देने खप्पर भर भर कर
वीरों को कायर करने
संगीत प्रेम का गाना क्यों ?

कवि ! बुजदिल अरे ! बनाता क्यों ?

अत्याचारों का जमघट है।
उसे मिटाना मानवता है।
घूँट खून का पी जाना
वीरता नहीं, सच कायरता है।
ऐसे समय भ्रष्ट पथ करने
वीणा मधुर बजाता क्यों ?

कवि ! बुजदिल अरे ! बनाता क्यों ?

दीन कामनाओं से पूरित
तोड़ तोड़ के अम्बर सारे
टूट टूट पड़ें अवनी पर
गम में नभ से चाँद सितारे।
कुण्ठित वासना से उद्वेलित
बीन बजा गाता है क्यों ?
कवि ! बुजदिल अरे ! बनाता क्यों

चूर्ण चूर्ण कर बीन फेंक दे
स्वर-लहरी में आग लगा दे।
मधु का प्याला तोड़ फोड़ कर
वैतरणी में उसे बहा दे
आ जा, सैनिक वेश बना लें
माँ का दूध लजाता क्यों ?
कवि ! बुजदिल अरे ! बनाता क्यों

नन्हें नन्हें कोमल कोमल
बच्चों के दिल की कलियों को
मसल मसल कर फेंक रहा क्यों ?
खिलने दे कोमल कलियों को
प्यारे देश दुलारे बच्चों
पर शोले बरसाता क्यों ?
कवि ! बुजदिल अरे ! बनाता क्यों

चला गया सामन्त काल,
मिट गई नवाबी, नवयुग आया।
जगे सभी हैं देश, कला
कौशल की बिखर रही है छाया।
चोटी पर चढ़ रही सभ्यता,
नीचे उसे गिराता क्यों ?
कवि ! बुजदिल अरे ! बनाता क्यों ?
"कविर्मनीषी" बनो बनो
गर्हित विषमय कवितायें छोड़ो।
हाला प्याला कसक मसक का
भरा घड़ा ठोकर दे फोड़ो।
लानत है ऐसी कविता पर
कवि का नाम लजाता क्यों ?
कवि ! बुजदिल अरे ! बनाता क्यों ?
कविता हो ऐसी जिसको
सुनते ही सोया जग, जग जावे।
उत्पीड़न शोषण मिट जावे
देश वीर हो, भय भग जावे।
कवि का ऊँचा पद हो जग में
जग है जला, जलाता क्यों ?
कवि ! बुजदिल अरे ! बनाता क्यों ?

काश्मीर

काश्मीर हिन्द का प्रमुख अङ्ग,
सदियों से रहता आया है।
इतिहास गवाही देता है।
है हिन्द देश का मुकुट-रत्न,
चमचम किरीट चमके उज्ज्वल.
गर्वोन्नत, रञ्जित-रश्मि-भाल,
हिमगिरि के अञ्चल में विशाल
नन्दनवन सा मनहर सुन्दर

केशर का देश हमारा है।
काश्मीर प्रदेश हमारा है।

भारत माता का शिरोरत्न
प्रकृती नित साज सजाती है
शत शत कवियों की अगम अचल
कल्पना स्रोत, जिससे पाती
दर्पण जो कोमल भावों का
कवि कान्तपदावलि से जिसका
गौरव गा गा बन गये अमर
कवियों को अमर बनाने-

वाला सुन्दर देश हमारा है।
कविता का देश हमारा है।

लहलही लताएँ झूम झूम
गुणगरिमा जिसकी गाती हैं।
शीतल सुगन्ध मलयज समीर
के झोंकों से बल खाती हैं।
हर्षित हरियाली से दर्शक की
आँखों को हरसाती हैं।
जिन पर मधुपावलि झूम झूम
गुण गरिमा गुन गुन गाती हैं।

लतिका का देश हमारा हैं।
भ्रमरों का देश हमारा है।

कविता की सरिता यही जहाँ
अभिनव धारा के साथ साथ
कल कल निनाद मय मधुर मधुर
संगीत नाद झंकृत दिगन्त
शारदासदन, क्रीड़ाउपवन, शुचि
प्रकृतिनटी का रंग-स्थल
द्रुतधार परागों का झर झर
झरता है निर्झरशत, प्रतिपल

पृथ्वी का स्वर्ग हमारा है।
हमको प्राणों से प्यारा है।

ऐसे शान्त देश पर भी
लुण्टाकों ने हमला बोला
हम नहीं करेंगे क्षमा उन्हें
झूठा अभिमान मिटा देंगे।
है अपनी कब्र स्वयं खोदी
भरपूर दबा दफना देंगे।
काश्मीर देश को अपने ही
बल पर हम आज बचा लेंगे।

भारत का जो ध्रुवतारा है।
फूलों का देश हमारा है।

जो वीर वहाँ पर जूझ रहे
वे सच्चे हिन्द सिपाही हैं
उनमें स्वदेश का मान भरा
अभिमान हिन्द का जोश नया
भारत के प्यारे वे सपूत
उन्नत स्वदेश के गर्व-पूर्ण
काश्मीर देश की रक्षा के
हित, आगे कदम बढ़ाते हैं।

बलिदान प्रदेश हमारा है।
पूजा का देश हमारा है।

हम न्यौछावर सब कर देंगे
बलि से समराङ्गण भर देंगे
अरि के सारे अरमानों को
टुकड़े टुकड़े भी कर देंगे।
चाहे आक्रामक चीनी हो
चाहे वह पाकिस्तानी हो
चाहे अरबी, चाहे तुर्की
चाहे कोई अफरीदी हो।

गोलों का देश हमारा है।
शोलों का देश हमारा है।

लालच देकर बहकाया था
हमले के लिए बुलाया था
पानी मुँह में भर आया था
सरसब्ज बाग दिखलाया था
मुँहकी खाई बेचारों ने
लेने के देने पड़े उन्हें
बरबादी लेकर भाग गये
जलती संगर की ज्वाला से

यह सप्तमनभ का तारा है।
माँ के नयनों का तारा है।

काश्मीर देश की लाज आज
भारत की लाज बनी बेशक
जयहिन्द हमारा नारा है
सरकार हमारी तत्पर है
नेशनल कांफ्रेंस के वीर सिपाही
लड़ने वाले सच्चे हैं
तय विजय हमारी ही होगी
बोलो भारत माता की जय

वीरों का देश हमारा है।
काश्मीर प्रदेश हमारा है।

★

पूजागीत

मनमंदिर में गूँजे गूँज वन्दे मातरम ।
अर्चना में उच्चरित हो मन्त्र वन्दे मातरम् ।
दुखी जग में न हो सुख शान्ति का साम्राज्य हो
म्यस्थ जन मन गण पुकारे बीज वन्दे मातरम् ।

ा, दृढ़ता, हो जगकी बन्धुता, श्रमशीलता
मातृ-मंदिर में मधुर ध्वनि धार वन्दे मातरम् ।
का हो त्याग समता राग, जन अनुराग हो
कोटि कल कंठों में पूरित राग वन्दे मातरम् ।

आर्यों का पुनः हो धर्मचक्रप्रवर्तनम
गा उठे, मसार मंजुल गीत वन्दे मातरम् ।
पर वलिदान हो धन, धाम, यौवन, जिन्दगी
हर श्वास के संचार में गुञ्जार वन्दे मातरम ।

★

देसड

रण-सज्जा

वीरों की सजी टोलियाँ हैं लड़ने को रण में जायेंगी।
विजयश्री को लेकर संग में हर्षित वापस आ जायेंगी।
रणभेरी बजी, सजी सेना, शस्त्रों की धार चमक आई।
वीरों के आनन पै अनूप सैनिक की छटा दमक आई।

कढ़ रहे वीर निज भवनों से माथे पै तिलक कर में मोली।
जय हिन्द और भारत माता की जय की बोल रहे बोली।
माताएँ प्यारे बच्चों को बहनें भाई को भेज रहीं।
बलिवेदी की आहुति देने रणसज्जा स्वयं सहेज रहीं।

कर में खप्पर ले रणचण्डी बलि लेने रण में आई है।
वीरों के मन में मर मिटने की केवल मस्ती छाई है।
सूरज में गर्मी आई है सागर भी तो लहराया है।
जोश जवानी का वीरों पर जोशीला चढ़ आया है।

विजयगान

गूँज जायेंगे गगन में ये विजय के गान मेरे।

उपवनों में मञ्जु मञ्जुल
झूलती होंगी लताएँ।
मन्द मलयज अनिल के संग
थिरकती होंगी दिशाएँ।
क्षितिज से उठ उठ निरन्तर
घहरती होंगी घटाएँ।
और होंगी प्रिय मिलन के
हेतु, चंचल चंचलाएँ।

सान्ध्य वेला में सभी मिल और गायेंगे सवेरे।
गूँज जायेंगे गगन में ये विजय के गान मेरे।

आज बढ़ना लक्ष्य मेरा
दूर तक बढ़ता चलूँगा।
क्रान्ति का सन्देश जग के
सामने पढ़ता चलूँगा।
विघ्न बाधाएँ कुचलता
धीर हो, हँसता चलूँगा।
शूल को भी फूल कर, धुन
में सदा चलता चलूँगा।

कौन होगा, सामने इस आँख के मेरे तरेरे।
गूँज जायेंगे गगन में ये विजय के गान मेरे।

तब नहीं कोई यहाँ पर
एक भी हैवान होगा।
हक्क होगा सब किसी को
सब कोई इंसान होगा।
कातिलाना जुल्मियों का
तब कहाँ फरमान होगा।
सब कोई आजाद होगा
और क्या अरमान होगा।

कौन सी है शक्ति रोधक राह जो मुझ को न दे रे।
गूँज जायेंगे गगन में ये विजय के गान मेरे।

सन्ध्यवेला

ग्राम प्रेम को त्याग, नगर के जीवन का अभिलाषी।
दूर प्रकृति से मानव मन बन गया विशेष विलासी।
आदि काल में नगरों की सत्ता का नाम नहीं था।
दूर दूर बस्ती, संकुलता का भी काम नहीं था।

सूत्रपात मानव-संस्कृति का पहले यहीं हुआ था।
गान ऋचाओं के मंडल का मङ्गल यहीं हुआ था।
संविधान निर्माण जहाँ था सामाजिक सस्कृति का।
हुआ यहीं आरम्भ कला, कौशल मानवता कृति का।

ग्राम हमारे स्वर्ग सदृश, ऋषियों के वास-स्थल थे।
आश्रम की सरसी में सुन्दर खिले हुए उत्पल थे।
सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय, तपस्यायें थीं।
ममता, मोह, द्वेष की चंचल नहीं कामनायें थीं।

प्रकृति छोड़ बन गया पुजारी मानव है, विकृति का।
अणु-आयुध निर्माणों में है छिपा विश्व संहृति का।
नाम नहीं नगरों में सुख का मृगमरीचिका छाई।
हो प्रत्यावर्तन ग्रामों में सन्ध्या-वेला आई।

कवि का सौन्दर्य

कवि का सौन्दर्य कहाँ है ? मादक माधुर्य कहाँ है ?

ज्वाला का नर्तन पग पग
बेकली दासता पल पल
दयनीय दशा लख लख कर
आँसू आते हैं छल छल ।
आँसू के निर्झर भर भर
झरते रहते हैं झर झर ।
सरिता दुख की कल कल कर
आप्लावित करती दर दर ।

यह मूक रुदन आलोड़ित ?

कवि का सौन्दर्य कहाँ है ? मादक माधुर्य कहाँ है ?

फूलों पर हँसी कहाँ है ?
अधरों पर खुशी कहाँ है ?
पुलिनों की मधुर सरसता
मादकता अहा ! कहाँ है ?
शाखाओं का आन्दोलन
लतिकाओं का उन्मीलन
पंचम में पिक का गायन
मादक मंजरी कहाँ है ?
यह सहसा एक समस्या ?
का सौन्दर्य कहाँ है ? मादक माधुर्य कहाँ है ?

पग पर मसली जातीं
त भावों की कलियाँ।
घर इकतार पिरोई-
आँसू की लड़ियाँ।
ी में रुप जातीं
त जीवन की घड़ियाँ।
ड़ न सकेंगी पल भर
टूट चुकी हैं कड़ियाँ ?
इसका उत्तर क्या होगा ?
का सौन्दर्य कहाँ है ? मादक माधुर्य कहाँ है ?

हृदयतार

जिन आँखों से देख
सत्य, शिव, सुन्दरतम
अब उन्हीं आज आँखों
देखा है निष्ठुरतम
वीभत्स भयानक अद्
का एक खोलपना
रस राज कमल के उ
पड़ गया वीम पाला
उजड़ा संसार रसीला

कवि का सौन्दर्य कहाँ है ? मादक माधुर्य कहाँ है

प्राची में मनहर किरणों
का नर्तन नवयुग लावे।
जो सूख गईं लतिकाएँ,
वे पुनः सरस सरसावें।
जीवन का साज सजावे।
मादकता भी लहरावे।
सच्ची आजादी आवे।
जग का कण कण जग जावे।
गावे जग विजय-तराना

कवि का सौन्दर्य यही है। मादक माधुर्य यही

✱

सर्वनाश की जलती होली ।

रंग निराला ढंग निराला
मादकता भी अजब निराली ।
देख देख छिप छिपकर क्षण क्षण
मार रहे हैं गन-पिचकारी ।
बरसों से हम खेल रहे हैं
खूनों की छलकाते रोली ।
सर्वनाश की आई होली ।

स्वयं मिटेंगे और मिटा देंगे
मानवता को इस जग से ।
मिटना और मिटाना केवल
लक्ष्य हमारा भीषण मग से ।
कभी न प्यास बुझेगी, चिर से-
प्यासे हैं हम चलती गोली ।
सर्व नाश की जलती होली ।

विद्याधर

करना है सर्वस्व निछावर
बची पास में घास नहीं है ।
सब जल जल कर स्वाहा होगा
जग भी अपना खास नहीं है।
जग. ममत्व का पता न होगा
त्यागी होगी हिसक टोली ।
सर्वनाश की जलती होली ।

कौन कराह रहा है ? बुजदिल
आह ! अरे परवाह नहीं है ।
भौतिक चीजों की इस जग की
सपने में भी चाह नहीं है ।
अमृत, गरल एक संग हँसते
कफन बनी है निर्दय झोली।
सर्वनाश की जलती होली ।

जलती है दासत्व, वेदना
आभा किरणें नभ पर फूटीं ।
जकड़ी चिर साम्राज्यवाद की
कड़ियाँ कड़क कड़क चट टूटीं।
झूम उठेंगे. सब कुछ खोकर
विजय हमारे जो संग हो ली
सर्वनाश की जलती होली।

भावी भारत

प्रजातन्त्र के पथ से सारी
उन्नत राज्य व्यवस्था होगी।
होंगे सुखी, स्वतन्त्र सभी
दयनीया नहीं अवस्था होगी।

कोई याचक नहीं रहेगा
लक्ष्मी से भाण्डार भरेगा।
वसुन्धरा होगी वसुन्धरा
बालू से भी रत्न झरेगा।

फल फूलों से हरी मेदिनी,
रस से भरे रसाल मिलेंगे।
पृथ्वी की तो बात तुच्छ है
नभ में सुख के पद्म खिलेंगे

जगह जगह उद्योग खुलेंगे
सब को सुखकर काम मिलेगा।
मजदूरी भरपूर मिलेगी
जिससे सब का काम चलेगा।

सत्यव्रत

खेती होगी वैज्ञानिक-विधि
से खेतों में अन्न फलेगा।
प्रचुर पशुधन गांवों में होगी
निर्धनता अभिशाप टलेगा।

कर का भार न मुश्किल होगा
बेकारी का नाम न होगा।
उत्पीड़न, शोषण पर शोषण
लूटपाट का नाम न होगा।

भूमिधर किसानों का होगा
बेदखली का नाम न होगा।
लाग न होगी, भाग न होगी
अत्याचार हराम न होगा।

गाँव हमारे धन, जन, बल से
पूर्ण मनोहर स्वर्ग बनेंगे
पंचायत की प्रथा चलेगी
नहीं कहीं अभियोग रहेंगे

कसरत सब भरपूर करेंगे
कोई निर्बल नहीं रहेगा।
सबल बनेंगे स्वस्थ बनेंगे
रोग न कोई यहाँ रहेगा।

रोटी के टुकड़े टुकड़े को
तरसेगा कोई न यहाँ पर।
टूट टूट जूठन खाने को
बरसेगा कोई न यहाँ पर।

खिलने के पहले ही कलियाँ
मुरझायेंगी नहीं यहाँ पर।
माताओं की भरी गोद भी
शून्य न हो पायेगी यहाँ पर।

दूध, दही, मक्खन, घी की तो
नदी बहेगी यहाँ निराली।
पयस्वती सुन्दर गायों से
कोई भवन न होगा खाली।

गोधन से बलवान बनेगा
देश हमारा गोधनवाला।
नस्ल सुधारी जायेगी तब
वृषभवृन्द होगा मतवाला।

कत्ल न गायों का फिर होगा
वत्स चराने हम जायेंगे।
वन में मिल-जुल ग्वाल बाल
हम वंशी बजा बजा गायेंगे।

अग्रगामिता

ऐ वीर ! मेरे बढ़ चलो, ऐ धीर ! मेरे बढ़ चलो ।
तुम बढ़ चलो तुम बढ़ चलो ।
यह उन्नती की है शिखर है पास में प्रतिभा प्रखर
भर भर छलांग जोरा भर तुम पार कर न देर कर
दुनिया के दिल पै छाप अपनी आन की तुम बढ़ चलो

तुम बढ़ चलो तुम बढ़ चलो ।
है सामने सेना खड़ी, विपक्षी अनी भी अड़ी
रुकने की नहीं है घड़ी प्रस्थान की आई घड़ी
लेकर विदाई घर से आन बान पै तुम बढ़ चलो

तुम बढ़ चलो तुम बढ़ चलो ।
आशा के दीप प्रज्ज्वलित जगमग प्रकाश हो रहा
सामन्तवाद रो रहा गणतन्त्र राज्य हो रहा
जनक्रान्ति का संदेश जग के सामने तुम बढ़ चलो

तुम बढ़ चलो तुम बढ़ चलो ।
ऐ वीर ! मेरे बढ़ चलो ।

★

डाली पर फूल खिला हँसता
सौरभ की छटा निराली थी।
उपवन भी झूम रहा मद से
काली कोयल मतवाली थी।
हरियाली छिटकी थी पग पग
भ्रमरों का राग सुहाता था।
उस ओर कभी जो आ निकला
पल में बेसुध हो जाता था।

उसको विदलित हो रजकण में मिलकर मिटते देखा है।
डाली सूनी उपवन सूना माली को रोते देखा है।

चाँदनी छिटकती, नभ मंडल
मुसकाता तारों के सँग में।
कैरव प्रसन्न, पय का निर्झर
झरता था नभ के आँगन में।
मानस सागर लहराता था
रजनी बाला मदमाती थी।
शीतल सुगन्ध मधु-गन्ध अन्ध,
मलयानिल छटा सुहाती थी।

तारों के बुझने जोत्स्ना को भी निर्मम छिपते देखा है।
शबनम के मिस फिर जार जार नभ को भी रोते देखा है।

दिन भर जो सूर्य चढ़ा नभ पर
जग पर शासन करता करता।
उद्दण्ड चण्ड पृथ्वी को पगतल
रौंद, भीति भरता भरता।
जगती के कोने कोने में
आतंक अनोखा छाया था।
मानो शंकर का नेत्र तीसरा
उन्मीलित हो आया था।

पश्चिम पयोधि में तेज हीन हो उसे डूबते देखा है
उसके पीछे नीरजमाला को अश्रु बहाते देखा है

बीतेगी रात, सवेरा होगा
सूर्योदय हो जायेगा।
सरसी में पंकज विहँसेंगे
आलोक मधुर छा जावेगा।
मधुपान प्रेममय फिर होगा
कोशस्थित भौंरा भूला था।
होने को थी बस प्रात, रात
भर सुख का झूला झूला था।

गज ने दिया उखाड़ कमल को अलि को पिटते देखा है
कारा में पड़कर अग जग को पल पल में मिटते देखा है

जागरण

यह हो रहा है जागरण है, व्यर्थ सो रहा।
उठ नौजवान जाग जाग लोक गा रहा।
सोता हुआ अब जाग जा आलस्य को भगा
सूरज भी ले प्रकाश को पथ में आरहा।

अब जाग जा वतन के लिए आ गया समय
घंटा निनाद घहरता सब ओर छा रहा।
सब चल पड़े मंदिर को, मंजिल है बड़ी दूर
भगवान् भी बलिदान को देखो बुला रहा।

सूरज भी लाल हो रहा है क्रान्ति आरही
रंग ढंग आसमां का बदलता है जारहा।
सब ओर उजाला है आग दिल में लग रही
सब बढ़ रहे हैं, पीछे नहीं कोई जा रहा।

चलना शिविर के साथ साथ राह है बड़ी
सैनिक भरा है जोश में झंडा उड़ा रहा।
मंदिर में चल के रश्मि शिर पर ले लगा कुंकुम
सेनानी है प्रयाण का बिगुल बजा रहा।

चन्द्री

*

नूतन वसन्त

मधु की कितनी रातें बीतीं
मकरन्द सुरभि के उत्सव से
लहलही लताएँ झूम रहीं
मादकता के मृदु आसव से।

उपवन तरुवर रसमय सुन्दर
फल के भारों से भरे हुए
सूखे पादप से दीन कृषक
क्षण भर भी सुख से हरे हुए?

चाँदनी गगन में छाती है
कुमुदों का मानस खिलता है,
होता उत्सव गगनाङ्गन में,
अम्बुधि को भी सुख मिलता है।

नद बहता है पय का मानो
आकाश धरा पर आता है
दलितों की दुनियाँ में तम का
फिर भी शासन छा जाता है।

प्रियतम

जीवन नैया किधर जा रही बहती रुकती मेरी।
कर्णधार ! मेरे आओ करते हो अब क्यों देरी।
उजड़े मरु मानस मंदिर में आवाहन तेरा है।
यही लालसा प्रिय दर्शन की व्याकुल मन मेरा है।

झंझावात, तिमिरतति नभ में कर भी नहीं दिखाता।
खोज खोज कर हार गया, रंचक प्रकाश ना पाता।
जलावर्त चक्कर देता नैया को खींच रहा है।
नहीं सहायक कोई, जग भी आँखें मींच रहा है।

अपने लिये पार क्या जाऊंगा, है नहीं ठिकाना।
[illegible] भगवन् ! करुण स्वरों का गाना।
[illegible] भाव से पूरी।
[illegible] क्या दूरी।

तुम [illegible] आओ।
[illegible] गले लगाओ।

मरु में भी वसन्त आता, वस,
अन्त यहाँ ऐसी यह कौन ?
ज्वाला ले अन्तस में सोई
मरु की भी मरुस्थली कौन ?

उठ उठ भाव झुलसते मृग से,
स्वयं जलाती जलती मौन
किसलय श्याम बने लपटों में,
घस्मर दावानल सी कौन ?

चिताज्वाल सी भस्मराशि
भावों को करनेवाली कौन ?
बाल-उमंगों के शव से, हिय,
हार सजी काली सी कौन ?

आँचल में भी दूध नहीं,
आँखों में लेकर पानी मौन
व्यथित हो रहा अम्बर मानस
कहती करुण-कहानी कौन ?

बाल प्रकाश न हँस हँस खेलें
जो अभाव में निशदिन मौन
अपना जग भी तिमिर विलोडित
स्नेहहीन दीपक सी कौन ?

देते थे जो दान आज
दर दर के बने भिखारी हैं।
पूजा करती किस्मत जिनकी
उसके बने पुजारी हैं।
कैसे मन्जिल पार करेंगे
बोझा शिर पर भारी है।
खेल खेलती असहायों से
किस्मत की बलिहारी है।

सर्वस बेवश गँवा चुके हैं, पास न कौड़ी कानी है।
निर्वासित पुरुषार्थी वीरों की यह करुण कहानी है।

दास घरों में घूमा करते
दास बने ये घूम रहे।
अतिथि घरों में झूमा करते
अतिथि बने ये झूम रहे।
सुख इनके पग चूमा करता
ये दुख के पग चूम रहे।
चढ़े हुए चंचल चिन्ता–
चक्रों पर हैं ये घूम रहे।

बने आज खानाबदोश हर खाक जहाँ की छानी है।
निर्वासित पुरुषार्थी वीरों की यह करुण कहानी है।

आजादी की पूरी कीमत
शोणित बहा चुकाई है।
उनके ही बलिदानों से
यह आजादी भी आई है।
खुद होकर बरबाद, देश को
पूर्ण आज आबाद किया।
देश हेतु बलिदान हुए
हमने ना इनको मान दिया।

सर्वस खोकर आज देश का रखना इनको पानी है।
निर्वासित पुरुषार्थी वीरों की यह करुण कहानी है।

लाल होगई धरती सारी
लाल हो गया था आकाश।
इनके खूनों से होली हा!
मौत खेलती करती हास।
किया न उफ! सब सहा, काल-
का छिन्न हो गया भैरव-पाश।
सूर्य चन्द्र मंडल पर सहसा
लगा राहु का कसा ग्रास।

देश विभाजन में अंग्रेज़ों की पूरी मनमानी है।
निर्वासित पुरुषार्थी वीरों की करुण कहानी है।

जुल्म जालिमों का शिर पर था
साथ किसी ने दिया नहीं।
अपने बल पर आगे बढ़ते
मदद किसी ने किया नहीं।
आशा जिनसे बहुत बड़ी,
शरणार्थी उनके कहलाये।
लानत ऐसी हमदर्दी पर
दिल से प्यार नहीं पाये।
इनके त्यागों की दुनिया में और न कोई सानी है।
निर्वासित पुरुषार्थी वीरों की यह करुण कहानी है।

पीढ़ियों से कर्जा आता,
उपज सब उसमें जाती है।
महाजन का कर्जा देते,
जिन्दगी सब खप जाती है।
गरीबी भी क्या है अभिशाप ?
बदल कर हो जावे वरदान।
लक्ष्य का भेदन हो तत्काल,
तीर का हो ऐसा संधान।

देश की आजादी के लिए
गरीबी है लांछन अपमान।
अन्न खाने को, वस्त्र पहनने
को रहने को नहीं मकान।
जन्म भर भूखे रह जाते,
पेट भर भोजन मिलता नहीं।
सदा मुरझाया रहता बदन,
कमल बन भूले खिलता नहीं।

सभी खाते क्यों दीनों को,
बन्द हो जाये यह भक्षण।
देश के जन जन की आजन्म
जीविका का हो संरक्षण ?

छटा छाई नभ-मंडल में
सुहातीं नीरद मालाएँ।
कल्पतरु-रस को रस से ले,
भेजतीं निर्जर वालाएँ।

सुहाई लाली प्राची में
निशा का होना है अवशेष।
देखकर झूम उठेंगे भ्रमर
सरोजों की श्री का उन्मेष।

नियति ने की भूलें स्वीकार
अचल हिमगिरिसम सरल किसान।
मिला है किसी देव का इन्हें
मनोवांछित पूरक वरदान।

आज देना है जीवनदान
लगा देना है तन, मन, धन।
सरस हो जाये जिससे सत्य
किसानों का शापित उपवन।

★

निर्धनता

उदर मे पलते ही चिन्ता-
चिता जगती कोमल मन में
अस्थिमात्र अवशेष, रक्त का
पता नहीं है, मानव तन में।

रक्त धमनियों में न प्रवाहित
पानी बन, बह गया है सारा।
चूर पसलियाँ हुईं, दैव ने
कैसा है पत्थर दे मारा।

नहीं दिखाई देता मग में
आँखों में अंधेरा छाया।
नव यौवन के पहले तन में
जर्जर-काय बुढ़ापा आया।

पेट पीठ से सटा हुआ है
रुक रुक डर डर साँसें चलतीं।
सीधे पाँव न [illegible] में
[illegible]हास मचलती।

काम नहीं मिलता है, मारे मारे
फिरते मानहीन हो।
बेकारी बढ़ गई है बेहद
व्याकुल हैं नर दीन मीन हो।

श्वास श्वास में भरी निराशा
अरे ! मनोरथ नहीं जानते।
"कुछ भी कर सकने की क्षमता
नहीं" स्वयं को दीन मानते।

नहीं सामने आते जग के
जीवन से भयभीत बने हैं।
इन्हें कहाँ सुख की मादकता
दुख के केवल मीत बने हैं।

अपने पर विश्वास नहीं है
कौन यहाँ पर रहा धनी है।
जीवन है उपहास मृत्यु का
निर्धनता अभिशाप बनी है।

★

शिक्षा का आलोक

भारत के कोने कोने में
शिक्षा की ज्योति जगायेंगे ।
जो अनपढ़ हैं भारतवासी
उनको हम आज पढ़ायेंगे ।
छाई है घटा काली काली
घनघोर अशिक्षा की नभ पर
जगमग जगमग सब जग होगा
विज्ञान-सूर्य चमकायेंगे।

नगर नगर अरु ग्राम ग्राम गृह
गृह, मठ मठ में मिल जुल कर ।
सबको ही शिक्षित करने हम
शिक्षण-शाला खुलवायेंगे ।
सीखेंगे अक्षर आ आकर
मस्ती में झूम उठेंगे सब ।
जिससे लहरा जाये जगजग
ऐसी इक लहर उठायेंगे ।

काम नहीं मिलता है, मारे मारे
फिरते मानहीन हो
बेकारी बढ़ गई है बेहद
व्याकुल हैं नर दीन मीन हो

श्वास श्वास में भरी निराशा
अरे ! मनोरथ नहीं जानते
"कुछ भी कर सकने की क्षमता
नहीं" स्वयं को दीन मानते

नहीं सामने आते जग के
जीवन से भयभीत बने हैं
इन्हें कहाँ सुख की मादकता
दुख के केवल मीत बने हैं

अपने पर विश्वास नहीं है
कौन यहाँ पर रहा धनी है
जीवन है उपहास मृत्यु का
निर्धनता अभिशाप बनी है।

★

एक परिवार निश्चित आधार,
जनता को पूर्ण ज्ञात है।
सब शिक्षित हों, सब स्वस्थ बनें,
यह जीवन मन्त्र सुनायेंगे।

एक ही दस

कैसे दीपावली मनायें

कहीं बाढ़ भूकम्प कहीं है
कहीं भुखमरी, रोग कहीं है।
अनावृष्टि, अतिवृष्टि कहीं है।
नष्ट हो रही सृष्टि कहीं है।
हाहाकार मचा है जग में
कैसे जगमग दीप जलायें ?
कैसे दीपावली मनायें ?

दाने दाने को मर रोते
अन्न बिना भूखे ही सोते।
तन ढकने को वस्त्र न पाते
बेबस करुण-गीत ही गाते।
पूजन का सामान अपरिमित
तूल-स्नेह कहाँ से लायें ?
कैसे दीपावली मनायें ?

कमला नाता तोड़ गई है
खुशी सदा मुख मोड़ गई है।
सरस कहाँ डालो ! सूखी है
सुषमा भी तो छोड़ गई है।
ऐसे सूखे उपवन को अब
किसविधिसे हम फिर सरसायें ?
कैसे दीपावली मनायें ?

रिक्त पड़ा है कोश हमारा
मिटा विभव सारा का सारा।
निर्धनता अभिशाप बनी है
शेष नहीं है कोई चारा।
लक्ष्मी के पूजन का सुख से
कैसे स्वर्णिम थाल सजायें ?
कैसे दीपावली मनायें ?

|||

उपवन में मादकता छाई
शरद् सरोजों पर मुसकाई।
सूखी डाली सरस सुहाई
सुषमा भी सुमनों पर छाई।
हास सुधा अधरों ने पाई
गीत खुशी के आओ, गावें।
सजनी ! दीपावली मनावें।

पूर्ण कोश स्वच्छन्द गगन है
सजग, जागरित, जग जन मन है।
मिटी वेदना घोर निराशा
मानस जग का प्रेम मगन है।
लक्ष्मी के पूजन का प्रेयसि!
सुख से स्वर्णिम थाल सजावें।
सजनी ! दीपावली मनावें।

★

जग में न्याय न मैंने देखा

[illegible] मरी हुई है
[illegible] फिर मरी हुई है।
[illegible]
[illegible] भी मरी हुई है।
सच्चा प्यार [illegible] का कोई
पर न मरेगा हँसना-रोना।
जग में न्याय न मैंने देखा।

बढ़े दया पर पैरों से
छोटों को, आगे बढ़े जा रहे।
दीनों के आक्रन्दन को दल
उच्चशिखर पर चढ़े जा रहे।
अपनी चालाकी से जग को
खूब दे रहे हैं, वे धोखा।
जग में न्याय न मैंने देखा।

एक थी कबूतर

शान्ति कहाँ है

[illegible]

कभी [illegible] कभी न मिलती
जग में शान्ति कहाँ है ?
ढूँढ़ रहे व्याकुल, जर्जर जन
जग में शान्ति कहाँ है ?

प्रेम न भाई भाई में है
भक्ति न गुरु-जन में है ।
प्रणय शून्य दाम्पत्य भार है
स्नेह न परिजन में है ।

गगन कुसुम हो गई अलक्षित
जग में शान्ति कहाँ है ?
ढूँढ़ रहे व्याकुल, जर्जर जन
जग में शान्ति कहाँ है ।

कहते सभी शान्ति हो, सुख से
मानव राज्य चलावें ।
पर न हृदय है स्वच्छ
किसी का शान्ति कहाँ से आवे ।

करते सभी प्रतारण, तारण
जग में शान्ति कहाँ है ?
ढूँढ़ रहे व्याकुल, जर्जर जन
जग में शान्ति कहाँ है ?

सबल राष्ट्र निर्बल देशों को
शोषित व्याज बनाते ।
कूटनीति से और परस्पर
सबको सदा लड़ाते ।

जब तक इनकी वक्र दृष्टि है
जग में शान्ति कहाँ है ?
ढूँढ़ रहे व्याकुल, जर्जर जन
जग में शान्ति कहाँ है ?

★

गीत

मंजिल पार करने के लिए विह्वल विहग है।

पवन है निस्पन्द, नभ
निर्मम, नीड़ न दीखता है।
वेदना-परिपूर्ण अन्तस
आग लेकर चीखता है।

थका केवल अकेला और हो जमता न पग है।
आज मंजिल पार करने के लिए विह्वल विहग है।

शक्ति कुछ बाकी नहीं है
जोश मारा जा रहा है।
दीखता पथ भी नहीं
आगे अँधेरा छा रहा है।

यह अकेला जा रहा है एक भी साथी न जग है।
आज मंजिल पार करने के लिए

सर्वस्व खोकर देश ने
था एक अनुपम रत्न पाया।
पालती थी अंक में ले
देश को वह छत्रछाया।
आज अन्तर्हित हुए
बाकी बचे वैसे असर हैं।

हो गया उत्सर्ग जीवन देश पर बापू अमर हैं।
क्रान्तियाँ उनकी अमर हैं, शान्तियाँ उनकी अमर हैं।

हो गया है अस्त हमसे
देश का सुन्दर सितारा।
छागया दुर्दैव है, जाता
रहा ध्रुव सा सहारा।
आज गम में कर रहे हम
जिन्दगी अपनी बसर हैं।

हो गया उत्सर्ग जीवन देश पर बापू अमर हैं।
क्रान्तियाँ उनकी अमर हैं, शान्तियाँ उनकी अमर हैं।

हुआ एक हुंकार सिंह का
कँपी धरा सागर लहराया।
मिटा पुरातन राजतन्त्र
गणतन्त्र लिए नवयुग को आया।
गृह स्तम्भ से विकट समय में
अन्तःशक्ति बनी थी पूरी।
विद्युत् पुलिस कार्यवाही से
"रजा" नीति रह गई अधूरी।

महासभा की अनुशासन से
शक्ति संघटित जिसने की थी।
कर्मवीर बनने की शिक्षा
स्वयं-सेवकों को भी दी थी।
"श्रद्धाञ्जलि" स्वीकार करो,
सेनानी ? जग में मान रहेगा।
जब तक चाँद सितारे तेरी-
गुणगरिमा का गान रहेगा।

|||
|

रहस्य

[illegible] जीवन में मैं निपट बेचैन
कौन छेड़ता [illegible] में देने आया चैन।
[illegible] का ही हार सजाया कलियों से हो दूर
आज [illegible] के आँसू लाने कौन सजग भरपूर।

ज्योति नहीं सपनों की पाती [illegible] का है सम्भार
चमक उठे हैं तारे नभ में फैला छलका प्यार।
मैं था केवल और न [illegible] मगर केवल था खेद
आज खोलने कौन प्रेम का मेरे आया भेद।

सूनी सूनी सी दुनियाँ थी, था बस आँसू का राज
कली कली अब फूल उठी हैं, सजा कौन सा साज।
जो सागर सोया था पहले लहरों से था रिक्त
वह असीम लहराया सहसा, तन मन सारा सिक्त।

किसने अरे! पुकारा मेरी कुटिया क्यों है शून्य
चरण-स्पर्श से तेरे प्रियतम? मैं होऊँगी धन्य।
मिलने को सपने में निमंत्रण दे जाता है मौन
दबे पाँव चुपके से निर्जन में आता है कौन?

चातक प्रेम

श्यामघन के बरसने की पूर्ण आशा हो गई है।
दीन चातक की निराशा सर्वदा को सो गई है।
दिन न जलने के रहे हैं, छा रही रंगत निराली
आँसुओं की आज लड़ियाँ हार सुन्दर हो गई हैं।

आश में लटके रहे हैं प्राण, जीवनधन मिलेंगे।
चातकी भी प्राणप्रिय के संग सुख में खो गई है।
ऐ भली स्वाती की बूँदे ! खूब बरसो प्रण निबाहो
श्याम माला कामना के बीज आकर बो गई है।

अब कपोलों पर न आविल नीर धारा दीखती है।
नेह से कादम्बिनी चातक की आँखें धो गई है।
अब न "पीपी" कर पुकारे यह पपीहा चिर पिपासित
उसको प्रियतम से मिलन की मधुर आशा हो गई है।

★

स्वर्ण-रेणु

मरुधरा के वक्ष पर सैकत ! मृदुल नवहार ।
छा रहे नभ में विलोडित वन कभी नीहार ।
हो रहे आरूढ़ वात्या पर बने निस्सार ।
भ्रान्त उड़ उड़ कर बसाते एक चल संसार ।

अगतिमय हो साधना में पल बने गतिमान ।
भानु की किरणें हृदय पर, हो रहे छविमान ।
रश्मियों के मिस लहरता प्रात स्वर्णिम साज ।
प्रकृति का समृद्धिशाली प्रस्त निर्जन राज ।

सानु का अभिमान मन में स्निग्ध कोमल गात ।
रेणु पारावार लख खिलता मनोजलजात ।
हो छिपाये अंक में गतकाल के इतिहास ।
ग्रीष्म, वर्षा, शीत में सम निखरता है हास ।

चाँदनी कलधौत का मंजुल हृदय पर हार ।
झुक रहे हो शान्त सुषमा के मनोरमभार ।
खुल गया अभिजात नव नव कल्पना का द्वार ।
मौन कवि विस्मृति-जगत में स्वर्ण-रेणु निहार ।

★

किसने मुझसे प्यार किया है ?

[illegible] मेरी [illegible] पड़ी थी
[illegible] थी।
धमक धमक कर उठती पलपल
हिय में [illegible] नोक गड़ी थी।
तन मन में बेचैनी छाई
किसने हिय पर हार दिया है ?
किसने मुझसे प्यार किया है ?

याद किसी की दिलमें छाई
आँखों में छवि है लहराई।
कोना कोना चमक उठा है
नभ में विमल चाँदनी छाई।
कितना मीठा मीठा सुन्दर
स्वप्नों का संसार [illegible] है।
[illegible] है ?

क सौ सैंदीस

चितवन सरल है रूपमाधुरी

हास विलास मनोज्ञ चातुरी।

स्मिति की रेखा चित्रित नभ पर

बजती मादक प्राण-बाँसुरी

उतर, निराश शून्य जीवन में

आशा का संचार किया है

किसने मुझसे प्यार किया है!

ममता-लता लहलही, गाती

कूक उठी कोयल मदमाती।

एकाकी जीवन में मेरे

बनने कौन संगिनी आती।

भूले भटके राही को—

मगपर लाने का भार लिया है।

किसने मुझसे प्यार किया है

शतरंगी परियाँ

बिन पिरोये भाव नभ में क्यों चमकते हैं।

शान्त था सागर, लहरियाँ शान्त थीं।
चेतना निर्बन्ध, कलियाँ क्लान्त थीं।
जग उठा तूफान फैला, क्षुब्ध है
सागर, सरल तारे दमकते हैं।
बिन पिरोये भाव नभ में क्यों चमकते हैं।

कलियाँ मन की गुपुन, मनोज थीं।
लीन थीं उर में अशेष उरोज थीं।
कौन सा झोंका लगा अँगड़ाइयाँ ले,
उठ पड़ी, नभ से उनींदे फूल खिलते हैं।
बिन पिरोये भाव नभ में क्यों चमकते हैं।

शुभ्र था नभ स्वच्छ निर्मल कान्त था।
तैरती तरियाँ न थीं निर्भ्रान्त था।
कौन सा इंगित हुआ शतरंग ये
परियाँ उठी, पगतल छलकते हैं।
बिन पिरोये भाव नभ में क्यों चमकते हैं ?

पुरुष सूक्त

तुम निराकार हो निर्विकार, साकार किन्तु हो जाते हो
ध्रुव आर्तनाद भक्तों के सुन, कर पल में दौड़े आते हो
आनन न एक ही है तेरा सर्वत्र गगन आननमय है
उच्छ्वसित वेद सारे तेरे श्रुतिमय प्रमुवर हो जाते हो

नेत्र न केवल दो ही हैं, वे हैं अनन्त अगजग-दर्शी
उनकी ही झलक इन सूर्य चन्द्र तारों में नित झलकाते
मस्तक न एक ही है तेरा तू हो सहस्रशीर्षा सन्त
मूर्धा हैं व्याप्त सभी लोकों में जिनसे शोभा पाते हैं

दो चरण नहीं जो मित होवें, वे अमित चराचर व्यापक हैं
होकर सहस्त्रशतपाद, किन्तु अंगुष्ठ मात्र हो जाते हो।
केवल दो श्रवण न तेरे हैं, अगणित हैं कौन गिने उनको
चंचल समीर के झोंको से श्रुतिमय संतत हो जाते हो।

तुम क्या हो? कैसे? कितने हो हम भूले भटके क्या जाने
तुम जटिल लोक के प्रश्नों का ध्रुव समाधान बन जाते हो
हम निराकार भी कहते हैं साकार भी तुमको कहते हैं
बन निराकार साकार पुनः तुम निराकार हो जाते हो

(२) श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ श्री १००८ श्री स्वामी सोमेश्वरानन्द जी भारती जी महाराज अध्यक्ष पंचमंदिर बीकानेर से लिखते हैं—

"पुष्पाञ्जलि" के यत्र तत्र प्रकरणों को समासतः देखा। प्रतिपाद्यवस्तु की अभिव्यक्ति में लेखक का विचार प्रतिबिम्बित हुआ है। सम्वाद द्वारा गहन विषयों को भी सरलता से समझा दिया गया है। उपादेय ग्रन्थ की छपाई सफाई भी आकर्षक है। इसके यशस्वी लेखक लक्ष्मी के अनन्य उपासक होते हुए भी सरस्वती साधना की ओर उन्मुख हैं; यह बड़ी प्रसन्नता की बात है। प्रपन्नपारिजात परमेश्वर से प्रार्थना है कि लेखक की शुभ साधना पूर्ण करें।

(३) श्री के. माधव कृष्ण शर्मा M. O. L. निरीक्षक सँस्कृत पाठशालाएँ राजस्थान एवं अध्यक्ष महाराजा सँस्कृत कॉलेज जयपुर से लिखते हैं—

आपके द्वारा भेजी गई "पुष्पाञ्जलि" नामक पुस्तक जिसमें सात एकाङ्की नाटकों का संग्रह है, प्राप्त हुई। इस प्रकार के शिक्षाप्रद एकाङ्की नाटकों का प्रकाशन हिन्दी जगत के लिए अपूर्व देन है। लेखक की भारतीय सँस्कृति में सुधारवादिता की प्रवृत्ति तथा पौराणिक अध्ययन व धर्मशास्त्र के ज्ञान का परिचय मिलता है जो सराहनीय है।

सँस्कृत का अन्तिम एकाङ्की नाटक सबसे सुन्दर है। जिसमें सँस्कृत को सर्वसाधारण के द्वारा सरलता पूर्वक

समझने योग्य बनाने का अनुपम प्रयास किया गया है। भाषा की सुन्दरता व श्रेष्ठता तथा शब्दों की योजना शोभनीय है। मैं सर्वदा इस प्रकार के नवचेतनामय प्रकाशन प्रयास के उत्तरोत्तर उन्नति के पथ पर अग्रसर होने की कामना करता हूँ।

(४) श्री धन्नूलाल जी शर्मा B. L. Attorney-at-law Calcutta से लिखते हैं—

"यह कृति उच्च भावनाओं से परिपूर्ण तथा बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत की गयी है। जिस समय मैं "सती" का परिच्छेद पढ़ रहा था उस समय मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मानो उपन्यास सम्राट कहे जाने वाले प्रेमचन्द की कहानी पढ़ रहा हूँ। परन्तु फिर शीघ्र ही मुझे स्मरण आया कि प्रेमचन्द की भाषा इतनी माञ्जल नहीं है और न भावनाएं ही इतनी सुन्दर हैं जो मैं पढ रहा हूँ। आप ऐसे युवकों को साहित्य क्षेत्र में अवतीर्ण हो देश, धर्म और जाति के अभ्युत्थान में सहायक होने वाली भावनाओं का प्रचुर प्रचार करना चाहिये।

(५) श्री विद्याधर शास्त्री एम. ए. प्रो० डूँगर कॉलेज बीकानेर से लिखते हैं—

श्री विट्ठलदास जी कोठारी बीकानेर के सामाजिक और साहित्यिक क्षेत्र में अपनी समाज सेवा ओजस्वितापूर्ण व्याख्यान शक्ति के लिए सदा से ही प्रसिद्ध रहे हैं।

पुष्पाञ्जलि के ७ एकाङ्की नाटकों में अब आपने अपनी परिष्कृत लेखन शक्ति का भी परिचय दिया है। इन नाटकों

में जिन विषयों को चुना गया है, वे हमारे
और हमारी सामाजिक प्रवृत्तियों की
लेखक के दार्शनिक एवं व्यावहारिक अनुभवों से
अनेक सुन्दर समाधानों को उपस्थित करते हैं।
ओजस्विनी और आकर्षक है। अनेक स्थलों में
शीला हि मन. प्रवृत्ति." के साथ कुछ नवीन शैली
अपनाया गया है।

अन्त में सत्यागमः के रूप में जिस
रूपक की संस्कृत में रचना की गयी है यह
है। पुष्पाञ्जलि के सब पुष्प सुगन्धित एवं मनो
हैं। इन नाटकों के निर्माण के लिए लेखक
हार्दिक बधाई।

(६) श्री विजय कुमार Bank house Bombay N
से लिखते हैं—

"पुष्पाञ्जलि" ने आपको अमर बना दिया है।
बड़ी विशेषता तो यह है कि इसके संवाद बड़े ही
और भावनापूर्ण हैं। साथ ही साथ शुद्ध साहित्यिक
भारतीय संस्कृति को पूर्ण रूप से चखने का जो
प्रदान करते हैं वे सराहनीय ही नहीं अपितु हिन्दी
की एक महानिधि भी हैं। मैं हार्दिक धन्यवाद दो।
जो भी पुष्पाञ्जलि के संसर्ग में आयेगा बिना आपको
दिये अपने आपको नहीं रोक सकेगा। अभी तक "पुष्पा
ञ्जलि" मेरे मित्रों के बीच घूम रही है। सबों ने
बहुत पसन्द किया है।

"पुष्पाञ्जलि" पर पत्रों की समालोचनाएँ

लेखक—विट्ठलदास कोठारी, पृष्ठ २०३ सजिल्द, मूल्य २)

"साहित्य सन्देश" आगरा:—

"पुष्पाञ्जलि" के सातों एकाङ्की नाटक धार्मिक एवं साँस्कृतिक भावना से अनुप्राणित हैं ; और इसका नैतिकस्तर बहुत ऊँचा है। ये नाटक संवादात्मक हैं ; तथापि विचारपूर्ण हैं । पुस्तक नैतिक भावनाओं के प्रचार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। जो लोग भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा के प्रेमी हैं; उनको यह संग्रह अवश्य रुचिकर होगा।

"राजस्थान भारती" बीकानेर:—

"पुष्पाञ्जलि" एक अत्यन्त सुन्दर रचना है ; जो पाश्चात्य तथा पौरस्त्य आधुनिक और प्राचीन विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करवाकर खरे खोटे को परखने की प्रेरणा प्रदान करती है। मानव क्या है ? विचारपुञ्ज। आजकल चतुर्दिक् दुःख द्वेष, दारिद्रय की ज्वालाएँ प्रज्वलित होरही हैं। लेखक ने आधुनिक मानव के मन को आलोड़ित तथा विपाक करनेवाले विचारसंघर्षों का शास्त्र, तर्क, तथा युक्तिपूर्वक मंथन करके परिणाम में नवनीत समुपस्थित करदिया है। स्वतन्त्र भारत की रमणी कैसी होनी चाहिये ? उसको अपने सम्मुख क्या आदर्श रखना चाहिये ? वह "विलासिता की चेरी" "त्याग भावना शून्य" तथा अधिकार चाहनेवाली होनी चाहिये अथवा "त्यागमूर्ति" 'परिश्रमी" विदुषी एवं गृहस्थ को सुचारु रूप से चलाने वाली होनी चाहिये ? लेखक ने इन पर प्रकाश डालते हुए लक्ष्य की ओर निर्देश किया है।

आजादी का वास्तविक स्वरूप "विवाह का रहस्य" पार्टीबन्दी को सद्दान्द के कुपरिणाम "आज की शिक्षा के ध्येय केवल कागजी पहलवान तैयार करना" विद्यार्थियों का बिगाड़, उनका मिथ्याचार, आहार, विहार, अनुशासनहीनता, आलस्य, प्रमाद, अहम्मन्यता, के सप्तसिन्धु में गिरकर समाज काल मकर की आहार सामग्री बनना" आदि विषयों पर कथोपकथन के रूप में बहुत सूक्ष्म ज्ञानयोग द्वारा जनहितकारी परिष्कृत विचार रखे हैं; समाज और विशेषतया विद्यार्थियों का महान हित होगा।